मेहनतकशों का पैग़ाम
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com
Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2020-22 /R.N.I. No. 2022007062

केवल वर्दी से नहीं होती पुलिसिंग, यह एक आर्ट है जिसमें नीयत, मेहनत और समझ चाहिए 2
श्रम क़ानूनों के बारे में हरियाणा सरकार अपना रुख स्पष्ट कर 4
गवर्नर मलिक से पूछा जाना चाहिए देश के चार साल क्यों छीने! 5
अतीक और अशरफ की नहीं, कानून के राज की हुई है हत्या! 6
नगर निगम के अफसरों ने पहले लूटा, अब जांच के नाम पर कर रहे बहाने बाजी 8

वर्ष 37 | अंक 38 | फरीदाबाद | 23-29 अप्रैल 2023 | फोन-8851091460 | ₹ 5.00

धर्म की आड़ लेकिन गरीबों के लिये नहीं

मोटी कमाई के लिये खुला है अम्मा अस्पताल

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा)। मूर्ख बनने को तैयार रहने और बार-बार धोखा खाने वाली जनता ने मान लिया था कि केरल से आई अमृतानंदमयी मां यानी अम्मा ने ग्रेटर फ़रीदाबाद में जो चेरीटेबल अस्पताल एवं मेडिकल कॉलेज स्थापित किया है वह उनका मुफ्त नहीं तो सस्ते में इलाज करने के लिये बना है। नासमझ लोगों की अक्ल को और कुंद करने के लिये इसका उद्घाटन प्रधानमंत्री मोदी से कराया गया। इससे अस्पताल को व्यापक प्रचार तो मिला ही साथ में लोगों का यह विश्वास और भी सुदृढ़ हो गया कि अस्पताल गरीबों की निष्काम सेवा के लिये ही बनाया गया है।

झूठ की पोल खुलने में ज्यादा देर नहीं लगी। लुभावने प्रचार में बहक कर बड़ी संख्या में मरीज़ इस तथाकथित चेरीटेबल अस्पताल की ओर खिंचने लगे। अस्पताल की दुकानदारी को बढ़ावा देने के लिये भाजपाई खट्टर सरकार ने न केवल अस्पताल को जाने वाली सड़कों को चकाचक कर दिया बल्कि रोडवेज़ की बसें भी इस रूट पर चला दीं। लेकिन जो मरीज़ वहां एक बार गया, अपनी जेबकटती देख कर दोबारा तो क्या बीच में ही इलाज छोड़कर भाग आया। इस तरह के तमाम मामले एक लाख रुपये से नीचे के होने के चलते ज्यादा नहीं उछल पाए। परन्तु बीते सप्ताह पड़ोस के गांव पलवली के केस में आठ घंटे में जब इन्होंने नौ लाख का बिल खड़ा कर दिया और वह भी मरीज के मरने के बाद, तो अस्पताल द्वारा लूट कमाई सुर्खियों में आ गई। इसकी

विस्तृत रिपोर्ट '**मज़दूर मोर्चा**' के गतांक में प्रकाशित की गई है।

इस संस्थान की भीतरी जानकारी रखने वाले भरोसेमंद सूत्रों के अनुसार इसे यहां स्थापित करने का निर्णय व्यापारिक हितों की दृष्टि से लिया गया था। केरल के कोच्चि स्थित अम्मा के अस्पताल में विदेशी मरीजों को पहुंचने में काफ़ी कठिनाई होती है। इसके विपरीत इस संस्थान को ऐसी जगह स्थापित किया गया है कि जहां से इन्दिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट तथा जेवर में शीघ्र चालू होने वाला एयरपोर्ट काफी नजदीक पड़ते हैं। जाहिर है इससे विदेशी मरीजों को आने में काफ़ी सुविधा रहेगी। इसके अलावा एनसीआर का पूरा क्षेत्र भी अच्छी-खासी कमाई देने वाला है। यदि अम्मा को चेरिटी ही करनी थी तो बिहार, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, विदर्भ आदि के उन क्षेत्रों में यह अस्पताल क्यों नहीं स्थापित किया जहां के लोगों ने अस्पताल देखा ही नहीं?

लगभग तमाम व्यापारिक अस्पताल ग्राहक फांसने के लिये जगह-जगह 'फ्री जांच कैम्प' लगाते रहते हैं। इनमें 'फ्री के' बहकावे में बहुत से लोग पहुंच जाते हैं। अक्सर इन कैम्पों में कुछ लोगों को छोटी-मोटी गोली आदि देकर चलता कर दिया जाता है। करीब 10-20 प्रतिशत लोगों को गंभीर बीमारी बता कर अपने-अपने अस्पताल में आने को कहा जाता है। अम्मा के अस्पताल ने भी यही ट्रिक अपनाई। लेकिन किसी एक को भी कोई दवा-गोली न देकर अपने अस्पताल में आकर कटने को कहा। धर्म एवं चैरिटी के आवरण में लगाये गये इन कैम्पों में शुरू-शुरू में तो काफी लोग आए लेकिन अस्पताल में जाकर कटने के बाद, अब लोगों ने इन कैम्पों का ही विरोध करना शुरू कर दिया है।

अम्मा के लिए सबक : सत्य साईं बच्चों का अस्पताल व सिखों का डायलिसिस केंद्र

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

पलवल के निकट सत्य साईं नामक एक धार्मिक संस्था ने बच्चों की हृदय शल्य चिकित्सा हेतु एक अस्पताल खोला हुआ है। यह शल्य चिकित्सा अति महीन एवं कठिन सर्जरी समझी जाती है, संपूर्ण उत्तर भारत में यह चिकित्सा यहां के अतिरिक्त केवल अपोलो जैसे व्यापारिक अस्पताल में ही हो सकती है। जाहिर है ऐसे में यहां मरीजों का अच्छा खासा आवागमन रहता है, इसके बावजूद यहां कोई फीस काउंटर नहीं है। कोई अपनी खुशी से कुछ देना भी चाहता है तो यह लोग लेने से साफ इनकार कर देते हैं और कहते हैं कि यदि कुछ देना ही है तो संस्था के पते पर स्वत: अपनी इच्छा एवं श्रद्धा अनुसार कुछ भिजवा देना।

इसी तरह का एक डायलिसिस संस्थान दिल्ली स्थित सराय कालेखां के निकट गुरुद्वारे में सिक्खों ने भी खोला हुआ है। वहां भी कोई फीस लेने का काउंटर नहीं बनाया गया है। कोई भी मरीज आए, लंगर खाए, अपना डायलिसिस कराए राजी खुशी अपने घर को जाए।

सत्य साईं हृदय रोग संस्थान में बच्चे का नि:शुल्क हो रहा ऑपरेशन

इसी तरह ईसाई मिशनरीज़ दूरदराज के उपेक्षित क्षेत्रों में शिक्षा और चिकित्सा की सेवाएं गरीब लोगों को देते हैं तो हिंदू धर्म के ठेकेदारों के पेट में दर्द होने लगता है। उन्हें लगता है कि ये मिशनरीज़ अपनी सेवाओं के बदले अपने धर्म का प्रचार करते हैं। यदि अम्मा को भी धर्म के नाम पर ही काम करना था तो लूट का धंधा नहीं करना चाहिए था।

अम्मा के कमर्शियल इरादे

133 एकड़ जमीन केवल अस्पताल और मेडिकल कॉलेज नहीं बल्कि शॉपिंग सेंटर और मॉल इत्यादि बनाने के लिए ली गई है। गत सप्ताह यहां खट्टर के आगमन को इसी उद्देश्य से जोड़ कर देखा जा रहा है। जल्द ही इससे संबंधित सच्चाई सामने आएगी जब यहां कमर्शियल प्लॉटों की बिक्री खोल दी जाएगी।

सिक्ख समाज द्वारा नि:शुल्क डॉयलिसिस का लाभार्थी